INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान EO & RO

REVENUE OFFICER (2nd Grade) & EXECUTIVE OFFICER (4th Grade)

RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION

ॐ सरस्वती मया दृष्ट्वा, वीणा पुस्तक धारणीम।

हंस वाहिनी समायुक्ता मां विद्या दान करोतु में ॐ।।

भाग – 1

राजस्थान का इतिहास + कला एवं संस्कृति

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**RPSC Executive Officer / Revenue Officer**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**RPSC Executive Officer / Revenue Officer**" भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें /*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/klbi9k

Online Order करें -https://bit.ly/eo-ro-notes

मूल्य : ₹	**संस्करण : नवीनतम**

	राजस्थान का इतिहास	
क्र. सं.	अध्याय	पेज नं.
1	प्रागैतिहासिक स्थल • पुरा पाषाण से ताम्र पाषाण एवं कांस्य युग तक	1
2	ऐतिहासिक राजस्थान • महत्वपूर्ण ऐतिहासिक केंद्र	10
3	प्रमुख राजवंशों के महत्वपूर्ण शासकों की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियां • गुर्जर प्रतिहार वंश • मेवाड़ का इतिहास • गुहिल वंश • चौहान वंश • परमार वंश • राठौड़ वंश • सिसोदिया वंश • कछवाहा राजवंश	17
4	मध्यकालीन राजस्थान में प्रशासनिक तथा राजस्व व्यवस्था	73
5	राजस्थान में मराठा शक्ति का विस्तार	76
6	आधुनिक राजस्थान • राजस्थान की रियासतें और ब्रिटिश संधियां • राजस्थान में 1857 की क्रांति में हुए प्रमुख विद्रोह • राजस्थान में प्रचलित विभिन्न सामाजिक कुरुतियाँ	88
7	राजस्थान राजनीतिक संगठन व समाचार पत्र	99
8	राजस्थान में राजनीतिक जागरण	102

9	राजस्थान में किसान एवं जनजाति आंदोलन	107
10	विभिन्न देशी रियासतों में प्रजामण्डल आंदोलन	116
11	राजस्थान का एकीकरण	128
	कला एवं संस्कृति	
1	राजस्थान की वास्तु परम्परा • मंदिर • किले एवं महल • राजस्थान की प्रमुख छत्तरियाँ	133
2	चित्रकला की विभिन्न शैलियाँ और हस्तशिल्प	168
3	प्रदर्शन कला • शास्त्रीय संगीत एवं शास्त्रीय नृत्य • लोक संगीत एवं वाद्य • लोक नृत्य एवं नाट्य	186
4	भाषा एवं साहित्य	218
5	धार्मिक जीवन • प्रमुख संत एवं सम्प्रदाय • राजस्थान के लोक देवी - देवता	230
6	राजस्थान में सामाजिक जीवन • मेले एवं त्यौहार • सामाजिक रीति रिवाज, परम्पराएँ • वेशभूषा एवं आभूषण	248
7	राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व	266

अध्याय – 1

प्रागैतिहासिक स्थल (सभ्यताएं)

- **पाषाणकालीन सभ्यता**

1. **बागौर (भीलवाड़ा)**
प्रिय छात्रों किसी भी सभ्यता का विकास किसी नदी के किनारे होता है क्योंकि जल ही जीवन है जल की आवश्यकता खेती के लिए और अन्य उपयोगों के लिए की पड़ती है।

- इसी प्रकार भीलवाड़ा जिले की माण्डल तहसील में कोठारी नदी के तट पर स्थित इस पुरातात्विक स्थल का उत्खनन 1967-68 से 1969-70 की अवधि में राजस्थान राज्य पुरातत्व विभाग एवं दक्कन कॉलेज, पुणे के तत्त्वावधान में श्री वी.एन. मिश्र एवं डॉ. एल.एस. लेशनि के नेतृत्व में हुआ है
- यहाँ से मध्य पाषाणकालीन (Mesolithic) लघु पाषाण उपकरण व वस्तुएँ (Microliths) प्राप्त हुई हैं।
- बागौर के उत्खनन में प्राप्त प्रस्तर उपकरण काल विभाजन के क्रम से तीन चरणों में विभाजित किये गये हैं। प्रथम चरण 3000 वर्ष ईसा पूर्व से लेकर 2000 वर्ष ईसा पूर्व तक, द्वितीय चरण 2000 वर्ष ईसा पूर्व से 500 वर्ष ईसा पूर्व का एवं तृतीय चरण 500 वर्ष ईसा पूर्व से लेकर प्रथम ईस्वी सदी तक की मानव सभ्यता की कहानी कहता है ।
- इन पाषाण उपकरणों को **स्फटिक** (Quartz) एवं चर्ट पत्थरों से बनाया जाता था। इनमें मुख्यतः पृथुक (Flake), फलक (Blade) एवं अपखण्ड (Chip) बनाये जाते थे। ये उपकरण आकार में बहुत छोटे (लघु अश्म उपकरण-Microliths) थे।
- बागौर में उत्खनन में पाषाण उपकरणों के साथ-साथ एक मानव कंकाल भी प्राप्त हुआ है।
- यहाँ पाये गये लघु पाषणा उपकरणों में ब्लेड, छिद्रक, स्क्रेपर, बेधक एवं चांद्रिक आदि प्रमुख हैं।
- ये पाषाण उपकरण चर्ट, जैस्पर, चाल्डेसनी, एगेट, क्वार्टजाइट, फ्लिंट जैसे कीमती पत्थरों से बनाये जाते थे । ये आकार में बहुत छोटे आधे से पौने इंच के औजार थे ये छोटे उपकरण संभवतः किसी लकड़ी या हड्डी के बड़े टुकड़ों पर आगे लगा दिये जाते थे।
- इन्हें मछली पकड़ने, जंगली जानवरों का शिकार करने, छीलने, छेद करने आदि कार्यों में प्रयुक्त किया जाता था। इन उपकरणों से यहाँ के लोगों का मुख्य व्यवसाय आखेट करना एवं कंद-मूल फल एकत्रित करने की स्थिति पर प्रकाश पड़ता है।
- यहाँ के प्रारंभिक स्तरों पर घर या फर्श के अवशेष नहीं मिलना साबित करता है कि यहाँ का मानव घुमक्कड़ जीवन जीता होगा।
- बागौर में द्वितीय चरण के उत्खनन में केवल 5 ताम्र उपकरण मिले हैं, जिसमें एक सूई (10.5 सेमी लम्बी), एक कुन्ताग्र (Spearhead), एक त्रिभुजाकार शस्त्र, जिसमें दो छेद हैं, प्रमुख हैं ।
- इस चरण के उत्खनन में मकानों के अवशेष भी मिले हैं जिससे पुष्टि होती है कि इस समय मनुष्य ने एक स्थान पर स्थायी जीवन जीना प्रारम्भ कर दिया था।
- इस काल की प्राप्त हड्डियों में गाय, बैल, मृग, चीतल, बारहसिंघा, सूअर, गीदड़, कछुआ आदि के अवशेष मिले हैं।
- कुछ जली हुई हड्डियाँ व मांस के भुने जाने के प्रमाण मिलने से अनुमान है कि इस काल का मानव मांसाहारी भी था तथा कृषि करना सीख चुका था।
- उत्खनन के तृतीय चरण में हड्डियों के अवशेष बहुत कम होना स्पष्ट करता है कि इस काल (500 ई. पूर्व से ईसा की प्रथम सदी) में मानव संस्कृति में कृषि की प्रधानता हो गई थी ।
- **बागौर उत्खनन** में कुल 5 **कंकाल** प्राप्त हुए हैं, जिनसे स्पष्ट होता है कि शव को दक्षिण पूर्व-उत्तर पश्चिम में लिटाया जाता था तथा उसकी टांगे मोड़ दी जाती थी।
- सभ्यता के तृतीय चरण में शव को उत्तर-दक्षिण में लिटाने एवं टांगे सीधी रखने के प्रमाण मिले हैं।
- शव को मोती के हार, ताँबे की लटकन, मृद्भाण्ड, मांस आदि सहित दफनाया जाता था। खाद्य पदार्थ व पानी हाथ के पास रखे जाते थे तथा अन्य वस्तुएँ आगे-पीछे रखी जाती थी।
- तृतीय चरण के एक कंकाल पर ईंटों की दीवार भी मिली है, जो समाधि बनाने की द्योतक है। मिट्टी के बर्तन यहाँ के द्वितीय चरण एवं तृतीय चरण के उत्खनन में मिले हैं।
- द्वितीय चरण के मृद्भाण्ड मटमैले रंग के, कुछ मोटे व जल्दी टूटने वाले थे। इनमें शरावतनें, तश्तरियाँ, कटोरे, लोटे, थालियाँ, तंग मुँह के घड़े व बोतलें आदि मिली हैं। (ये मृद्भाण्ड रेखा वाले तो थे परन्तु इन पर अलंकरणों का अभाव था।
- ऊपर से लाल रंग लगा हुआ है। ये सभी हाथ से बने हुए हैं) (तृतीय चरण के मृद्भाण्ड पतले एवं टिकाऊ हैं तथा चाक से बने हुए हैं। इन पर रेखाओं के अवशेष मिले हैं, परन्तु अलंकरण बहुत कम मिले हैं।
- (आभूषण: बागौर सभ्यता में मोतियों के आभूषण तीनों स्तरों के उत्खनन में प्राप्त हुए हैं। हार तथा कान की लटकनों में मोती बहुतायत से प्रयुक्त किये जाते थे।
- ये मोती एगेट, इन्द्रगोप व काँच के बने होते थे। मकान : बागौर में मकानों के अवशेष द्वितीय एवं तृतीय चरण में प्राप्त हुए हैं। हार तथा कान की लटकनों में मोती बहुतायत से प्रयुक्त किये जाते थे। ये मोती एगेट, इन्द्रगोप व काँच के बने होते थे।)
- **मकान : बागौर में मकानों के अवशेष द्वितीय एवं तृतीय चरण** में प्राप्त हुए हैं। मकान पत्थर के बने हैं। फर्श में भी पत्थरों को समतल कर जमाया जाता था।
- बागौर में मध्यपाषाणकालीन पुरावशेषों के अलावा लौह युग के उपकरण भी प्राप्त हुए हैं। इस सभ्यता के प्रारंभिक

निवासी आखेट कर अपना जीवन यापन करते थे। परवर्ती काल में वे पशुपालन करना सीख गये थे। बाद में उन्होंने कृषि कार्य भी सीख लिया था।

कांस्ययुगीन सभ्यताएं -

2. **कालीबंगा की सभ्यता -**

कालीबंगा की सभ्यता एक नदी के किनारे बसी हुई थी। नदी का नाम है - **सरस्वती नदी** । इसे **द्रषनदी, मृतनदी, नटनदी** के नाम से भी जानते हैं।

यह सभ्यता हनुमानगढ़ जिले में विकसित हुई थी हनुमानगढ़ जिले में एक अन्य सभ्यता जिसे **पीलीबंगा** की सभ्यता कहते हैं विकसित हुई।

इस सभ्यता की खोज -

- इस सभ्यता की सबसे पहले जानकारी देने वाले एक पुरातत्ववेत्ता एवं भाषा शास्त्री एल.पी. टेस्सिटोरीथे। इन्होंने ही इस सभ्यता के बारे में सबसे पहले परिचय दिया लेकिन इस सभ्यता की तरफ किसी का पूर्णरूप से ध्यान नहीं था इसलिए इसकी खोज नहीं हो पाई।
- इस सभ्यता के खोजकर्ता **अमलानंद घोष** है। इन्होंने 1952 में सबसे पहले इस सभ्यता की खोज की थी।
- इनके बाद में इस सभ्यता की खोज दो अन्य व्यक्तियों के द्वारा भी की गई थी जो 1961 से 1969 तक चली थी।

1. **बृजवासीलाल (बी.बी. लाल)**
2. **बीके (बालकृष्ण) थापर**

इन्हीं दोनों ने इस सभ्यता की विस्तृत रूप से खोज की थी

एल.पी. टेस्सिटोरी के बारे में -

- ये इटली के के निवासी थे । इनका जन्म सन् 1887 में हुआ। और यह अप्रैल 1914 ईस्वी में भारत मुंबई आए। जुलाई 1914 में यह जयपुर (राजस्थान) आये । बीकानेर राज्य इनकी कर्म स्थली रहा है ।
- उस समय के तत्कालीन राजा महाराजागंगा सिंह जी ने इन्हें अपने राज्य के सभी प्रकार के चारण साहित्य लिखने की जिम्मेदारी दी ।
- बीकानेर संग्रहालय भी इन्होंने ही बनवाया है ये एक भाषा शास्त्री एवं पुरातत्ववेत्ता थे उन्होंने राजस्थानी भाषा के दो प्रकार बताए थे।

1. पूर्वी राजस्थानी
2. पश्चिमी राजस्थानी

- इस सभ्यता का कालक्रम **कार्बन डेटिंग पद्धति** के अनुसार 2350 ईसा पूर्व से 1750 ईसा पूर्व माना जाता है।
- कालीबंगा शब्द "सिंधीभाषा" का एक शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है - **"काले रंग की चूड़िया"**। इस स्थल से काले रंग की चूड़ियों के बहुत सारी ढेर प्राप्त हुए इसलिए इस सभ्यता को कालीबंगा सभ्यता नाम दिया गया।
- कालीबंगा की सभ्यता भारत की ऐसी पहली सभ्यता स्थल है जो **स्वतंत्रता के बाद खोजी** गई थी। यह एक **कांस्य युगीन सभ्यता** है।
- हनुमानगढ़ जिले से इस सभ्यता से संबंधित जो भी वस्तुएं प्राप्त हुई है उनको सुरक्षित रखने के लिए राजस्थान सरकार के द्वारा **1985-86 में कालीबंगा संग्रहालय** की स्थापना की गई थी । यह संग्रहालय **हनुमानगढ़** जिले में स्थित है।

इस सभ्यता की विशेषताएँ -

- इस सभ्यता की सड़कें एक दूसरे को **समकोण** पर काटती थी । इसलिए यहाँ पर मकान बनाने की पद्धति को **"ऑक्सफोर्ड पद्धति"** कहते हैं। इसी पद्धति को **'जाल पद्धति, ग्रीक, चेम्सफोर्ड पद्धति'** के नाम से भी जानते हैं।
- मकान कच्ची एवं पक्की ईंट के बने हुए थे, आरम्भ में ये कच्ची ईंटे थीं इसलिए इस सभ्यता को दीन हीन सभ्यता भी कहते है। इन ईंटों का आकार 30×15×7.5 है ।
- इन मकानों की खिड़की एवं दरवाजे पीछे की ओर होते थे।
- यहाँ पर जो नालियां बनी हुई थी वह लकड़ी (काष्ठ) की बनी होती थी। आगे चलकर इन्हीं नालियों का निर्माण पक्की ईंटों से होता था ।

  (विश्व में एकमात्र ऐसा स्थान जहां लकड़ियों की बनी नालियाँ मिली है वह कालीबंगा स्थल है) **(परीक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण)**
- विश्व की प्राचीनतम **जुते हुए खेत** के प्रमाण इसी सभ्यता से मिले हैं।
- यहाँ पर मिले हुए मकानों के अंदर की दीवारों में दरारें मिलती हैं इसलिए माना जाता है कि विश्व में प्राचीनतम भूकंप के प्रमाण यहीं से प्राप्त होते हैं।
- यहाँ के लोग एक साथ में **दो फसलें** करते थे अर्थात् फसलों के होने के प्रमाण भी यहीं से मिलते हैं **जौ और गेहूं।**
- यहाँ पर उत्खनन के दौरान **यज्ञकुंड / अग्नि वेदिकाएं** प्राप्त हुए हैं यहाँ के लोग **बलिप्रथा** में भी विश्वास रखते थे।
- इस सभ्यता का पालतू जीव **कुत्ता** था। इस सभ्यता के लोग **ऊँट** से भी परिचित थे इसके अलावा **गाय, भैंस, बकरी, घोड़ा से** भी परिचित थे ।
- विश्व में प्राचीनतम् नगर के प्रमाण यहीं पर मिले हैं इसलिए इसे **नगरीय सभ्यता** भी कहते हैं यहाँ पर मूर्तिपूजा, देवी / देवता के पूजन, चित्रांकन या मूर्ति का कोई प्रमाण नहीं मिला है।
- यहाँ पर समाधि प्रथा का प्रचलन था । यहाँ पर **समाधि तीन प्रकार** की मिलती है अर्थात् तीन प्रकार से मृतक का अंतिम संस्कार किया जाता था
- अंडाकार गड्डा खोदकर व्यक्ति को दफनाना । इस गड्डे में व्यक्ति का सिर उत्तर की ओर पैर दक्षिण की ओर होते थे।
- अंडाकार गड्डा खोदकर व्यक्ति को तोड़ मरोड़ कर इकट्ठा करके दफनाना ।
- एक गड्डा खोदकर व्यक्ति के साथ आभूषण को दफनाना।
- **स्वास्तिक चिह्न** का प्रमाण इसी कालीबंगा सभ्यता से प्राप्त होता है इस स्वास्तिक चिह्न का प्रयोग यहाँ के लोग वास्तुदोष को दूर करने के लिए करते थे ।
- कालीबंगा की सभ्यता और मेसोपोटामिया की सभ्यता की **समानता** के प्रमाण **बेलनाकार बर्तन** में मिलते हैं।

अभ्यास प्रश्न

1. किस संग्रहालय में कुम्हारों की कलाकृतियाँ, देवी देवताओं की टेराकोटा की मूर्तियां भी प्रदर्शित है ?
(a) कालीबंगा संग्रहालय
(b) आहड़ संग्रहालय
(c) बागौर का संग्रहालय
(d) जनजाति संग्रहालय (d)

2. निम्न में से किस संग्रहालय की गैलरियाँ की आकृतियाँ अंग्रेजी वर्णमाला के U के आकार की हैं?
(a) राजपुताना संग्रहालय
(b) बागौर संग्रहालय
(c) कालीबंगा संग्रहालय
(d) आहड़ संग्रहालय (c)

3. पुरावशेषों के संरक्षण हेतु कालीबंगा संग्रहालय की स्थापना कहाँ की गयी।
(a) हनुमानगढ़ (b) कालीबंगा
(c) श्रीगंगानगर (d) रंगमहल (d)

4. ईरान के शासक शाह ने मिर्जा राजा जयसिंह को एक गलीचा भेट किया, वर्तमान में यह गलीचा किस संग्रहालय में संग्रहित है ?
(a) अल्बर्ट हॉल, जयपुर
(b) राजकीय संग्रहालय, अजमेर
(c) राजकीय संग्रहालय हवामहल, जयपुर
(d) डॉल संग्रहालय, जयपुर (a)

5. मैगजीन व राजपुताना संग्रहालय के नाम से प्रसिद्ध संग्रहालय स्थित है ?
(a) उदयपुर (b) जयपुर
(c) जोधपुर (d) अजमेर (d)

6. राजकीय संग्रहालय अजमेर की स्थापना किस वर्ष की गयी ?
(a) 1906 ई. (b) 1908 ई.
(c) 1910 ई. (d) 1912 ई. (b)

7. अल्बर्ट हॉल के वास्तुकार कौन थे ?
(a) स्टीफन कॉल्विन
(b) स्टीफन जेकब
(c) स्टीफन निक्सन
(d) स्टीफन जॉर्ज (b)

8. किराडू से प्राप्त सुर सुंदरी व् लोद्रवा से प्राप्त अर्धनारीश्वर की प्रतिमाएं किस संग्रहालय में सुरक्षित है ?
(a) जैसलमेर संग्रहालय में
(b) बागौर संग्रहालय
(c) जनजाति संग्रहालय में
(d) सिटी पैलेस उदयपुर में (a)

9. प्राचीन जीवाश्म, हथियार व प्राचीन सिक्के किस संग्रहालय में संग्रहित है ?
(a) उदयपुर में (b) जैसलमेर में
(c) पाली (d) सीकर (b)

10. जैसलमेर संग्रहालय की स्थापना कब हुई ?
(a) 1980 ई. (b) 1981 ई.
(c) 1983 ई. (d) 1984 ई (d)

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 3

प्रमुख राजवंशों के महत्वपूर्ण शासकों की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियां

गुर्जर प्रतिहार वंश :-

- गुर्जर प्रतिहारों ने लगभग 200 सालों तक अरब आक्रमणकारियों का प्रतिरोध किया ।
- डॉ. आर सी. मजूमदार के अनुसार-गुर्जर प्रतिहारों ने छठी से 11वीं शताब्दी तक अरब आक्रमणकारियों के लिए बाधक का कार्य किया ।
- जोधपुर के **बौक शिलालेख** के अनुसार गुर्जर प्रतिहारों का अधिवास मारवाड़ में लगभग 6वीं शताब्दी के द्वितीय चरण में हो चुका था ।
- 8वीं-10वीं शताब्दी में उत्तर भारत में मंदिर व स्थापत्य निर्माण शैली **महाभारत शैली / गुर्जर-प्रतिहार शैली** प्रचलित थी ।
- अग्निकुल के राजपूतों में सर्वाधिक प्रसिद्ध प्रतिहार वंश था, जो गुर्जरों की शाखा या गुर्जरात्रा प्रदेश से संबंधित होने के कारण इतिहास में **गुर्जर-प्रतिहार** के नाम से जाना गया ।
- गुर्जर प्रतिहारों का प्रभाव केन्द्र मारवाड़ था। गुर्जरात्रा प्रदेश में रहने के कारण प्रतिहार **गुर्जर प्रतिहार** कहलाए।
- गुर्जरात्रा प्रदेश की राजधानी **"भीनमाल (जालौर)"** थी । बाणभट्ट ने अपनी पुस्तक ' हर्षचरित ' में गुर्जरों का वर्णन किया है ।
- इस वंश की प्राचीनता बादामी के चालुक्य नरेश पुल्केशिन द्वितीय के ऐहोल अभिलेख में 'गुर्जर जाति' के **सर्वप्रथम** उल्लेख से मिलती है ।
- डॉ. आर. सी. मजूमदार के अनुसार-प्रतिहार शब्द का प्रयोग मण्डौर की प्रतिहार जाति के लिए हुआ है क्योंकि प्रतिहार अपने आप को लक्ष्मण जी का वंशज मानते थे ।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा वृतांत (ग्रंथ) सियूकी में **कु-ची-लो (गुर्जर)** देश का उल्लेख करता है ।
- जिसकी राजधानी **पि-लो-मो-लो** (भीनमाल) में थी । अरबी यात्रियों ने गुर्जरों को **'जुर्ज'** भी कहा है ।
- **अल मसूदी प्रतिहारों** को अल गुर्जर तथा प्रतिहार राजा को **'बोरा'** कहकर पुकारता है। भगवान लाल इन्द्जी ने गुर्जरों को 'गुजर' माना है, जो गुजरात में रहने के कारण गुर्जर कहलाए ।
- देवली, राधनपुर तथा करडाह अभिलेखों में प्रतिहारों को गुर्जर प्रतिहार कहा गया है । डॉ. गौरीशंकर ओझा प्रतिहारों को क्षत्रिय मानते हैं । जॉर्ज केनेडी गुर्जर प्रतिहारों को **ईरानी मूल** के बताते हैं ।
- **मिस्टर जैक्सन** ने बम्बई गजेटियर में गुर्जरों को विदेशी माना है ।
- प्रतिहार राजवंश महामारू मंदिर निर्माण वास्तुशैली का संरक्षक था । **कनिघंम** ने गुर्जर प्रतिहारों को कुषाणवंशी कहा है ।
- डॉ. भंडारकर ने गुर्जर प्रतिहारों को खिज्रों की संतान बताकर विदेशी साबित किया है।
- स्मिथ स्टेनफोनो ने गुर्जर प्रतिहारों को हूणवंशी कहा है।
- भोज गुर्जर प्रतिहार वंश का शासक था ।
- भोज द्वितीय प्रतिहार राजा के काल में प्रसिद्ध ग्वालियर प्रशस्ति की रचना की गई। **मुहणोंत नैणसी** (मारवाड़ रा परगना री विगत) के अनुसार-गुर्जर प्रतिहारों की कुल 26 शाखाएं थी इनमें से दो प्रमुख थी - मण्डौर व भीनमाल ।
- गुर्जर प्रतिहारों की कुल देवी चामुंडा माता थी ।

भीनमाल शाखा (जालौर)

- **गुर्जर प्रतिहार वंश** – प्रतिहार शब्द वास्तव में पदनाम है जिसका अर्थ द्वारपाल है। अभिलेखिक रूप से गुर्जर जाति का उल्लेख सर्वप्रथम चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय के एहोल अभिलेख में हुआ है।
- उत्तर-पश्चिम भारत में गुर्जर प्रतिहार वंश का शासन छठी से बारहवीं शताब्दी तक रहा।
- इतिहासकार रमेशचन्द्र मजूमदार ने गुर्जर प्रतिहार को छठी से बारहवीं शताब्दी तक अरब आक्रमणकारियों के लिए बाधक का काम करने वाला बताया है।
- गुर्जरात्रा (गुर्जर प्रदेश) के स्वामी होने के कारण प्रतिहारों को गुर्जर प्रतिहार कहा गया है।
- नीलगुण्ड, राधनपुर, देवली तथा करहाड़ के अभिलेखों में इन्हें गुर्जर कहा गया।
- मिहिरभोज के ग्वालियर अभिलेख में नागभट्ट को रामका प्रतिहार तथा विशुद्ध क्षत्रिय कहा गया है।
- अरब यात्रियों ने इनके लिए 'जुर्ज' शब्द का प्रयोग किया है। अलमसूदी ने गुर्जर प्रतिहारों को 'अल गुजर' तथा राजा को 'बोरा' कहा है।
- राजशेखर ने अपने ग्रंथ 'विद्धशालभंजिका' में प्रतिहार महेन्द्रपाल को रघुकुल तिलक (सूर्यवंशी) लिखा है।
- मुहणोत नैणसी ने प्रतिहारों की 26 शाखाओं का उल्लेख किया है।
- चीनी यात्री हवेनसांग ने अपने ग्रंथ 'सियूकी' में गुर्जर राज्य को 'कु-चे-लो' (गुर्जर) तथा इसकी राजधानी 'पीलोमोलो' (भीनमाल) बताया है।
- कवि पम्प ने अपने ग्रंथ पम्पभारत' में कन्नौज शासक महीपाल को गुर्जर राजा बताया है।
- कैनेडी ने प्रतिहारों को ईरानी मूल का बताया है।
- उद्योतन सूरी ने अपने ग्रंथ 'कुवलयमाला' में गुर्जर शब्द का प्रयोग एक जाति विशेष के रूप में किया है।
- डॉ. भंडारकर ने प्रतिहारा को विदेशी गुर्जर जाति की संतान माना है।

मण्डोर के प्रतिहार

- मण्डोर के प्रतिहार गुर्जर प्रतिहारों की 26 शाखाओं में से सबसे महत्त्वपूर्ण एवं प्राचीन मण्डोर के प्रतिहार थे।
- मण्डोर के प्रतिहार स्वयं को 'हरिश्चन्द्र नामक ब्राह्मण' (रोहिलद्धि)का वंशज बताते हैं।
- हरिश्चन्द्र के दो पत्नियां थी- एक ब्राह्मणी और दूसरी क्षत्राणी भद्रा। उसकी ब्राह्मणी पत्नी से उत्पन्न संतान प्रतिहार ब्राह्मण तथा क्षत्राणी भद्रा से उत्पन्न संतान क्षत्रिय प्रतिहार कहलाये।
- हरिश्चन्द्र की रानी भद्रा से चार पुत्र- भोगभट्ट, कदक, रज्जिल और दद्द उत्पन्न हुए।
- इन चारों ने मिलकर मण्डोर को जीता तथा यहाँ गुर्जर प्रतिहार वंश की स्थापना की।
- मण्डोर के प्रतिहारों की वंशावली हरिश्चन्द्र के तीसरे पुत्र रज्जिल से प्रारंभ होती है।

रज्जिल

- हरिश्चन्द्र के चार पुत्रों में से रज्जिल मण्डोर का शासक बना।

नागभट्ट प्रथम

- यह रज्जिल का पौत्र था।
- इसने मेड़ता को अपनी राजधानी बनाया।

शीलुक

- शीलुक ने वल्ल मण्डल के शासक भाटी देवराज को हराकर अपने राज्य की सीमा का वल्ल तक विस्तार किया।

कक्क

- यह शीलुक का पौत्र था।
- इसने मुंगेर के युद्ध में पाल वंश के शासक धर्मपाल को पराजित किया।
- इसके दो पुत्र थे- बाउक तथा कक्कुक।

बाउक

- बाउक एक प्रतापी शासक था जिसने अपने शत्रु नन्दवल्लभ को मारकर भूअकूप पर अधिकार कर लिया।
- इसका 837 ई. का 'मण्डोर (जोधपुर) का शिलालेख' प्राप्त हुआ है जिसमें बाउक ने अपने वंश का वर्णन अंकित करवाया।
- बाउक ने मयूर नामक राजा को पराजित किया था।

कक्कुक

- बाउक के बाद उसका भाई कक्कुक मण्डोर का शासक बना।
- घटियाला से प्राप्त दोनों शिलालेख कक्कुक के समय के हैं।
- इसने रोहिंसकूप (घटियाला- वर्तमान फलौदी) के निकट गावों में बाजार बनवाये तथा व्यापार में वृद्धि की।
- कक्कुक के द्वारा घटियाला तथा मण्डोर में जयस्तम्भ भी स्थापित करवाये गये।
- कालान्तर में मण्डोर के आस-पास के क्षेत्र पर चौहानों का अधिकार हो गया लेकिन मण्डोर प्रतिहारों की इन्दा शाखा के अधीन रहा।
- इन्दा प्रतिहारों ने राठौड़ चूँडा के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित कर मण्डोर का क्षेत्र राठौड़ों को दहेज में दे दिया।
- इस घटना के साथ ही मण्डोर प्रतिहारों का राजनीतिकी इतिहास समाप्त हो गया।

भड़ोंच के गुर्जर प्रतिहार

दद्द प्रथम

- भड़ोंच के गुर्जर राज्य का संस्थापक हरिश्चन्द्र का पुत्र दद्द प्रथम था।
- इस शाखा के 629 ई. से 641 ई. के कुछ दानपत्र मिले हैं जिनसे यह सिद्ध होता है कि नान्दीपुर इन गुर्जर प्रतिहारों की राजधानी थी।
- दद्द प्रथम ने नागवंशियों तथा वनवासी राजा निरिहुलक के राज्य पर अधिकार किया था।

जयभट्ट प्रथम

- जयभट्ट प्रथम दद्द प्रथम का पुत्र था। इसकी उपाधि 'वीतराग' थी।
- जयभट्ट प्रथम हर्षवर्धन के समकालीन था।
- संखेड़ा दानपत्रों से उसकी विजयों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।
- उमेता, ललुआ तथा बेगुमरा शिलालेखों के अनुसार जयभट्ट प्रथम ने वल्मी की सेना को काठियावाड़ प्रान्त में पराजित किया था।
- इसने कलचुरियों को भी पराजित किया था।

दद्द द्वितीय

- जयभट्ट प्रथम के बाद उसका पुत्र दद्द द्वितीय शासक बना, जिसकी उपाधि 'महाराजा प्रशांतराग' थी।
  - बड़ौदा के संखेड़ा नामक स्थान से दद्द द्वितीय के दानपत्र प्राप्त हुए हैं जिनकी भाषा संस्कृत तथा लिपि ब्राह्मी है।
  - दद्द द्वितीय के समय हर्षवर्धन ने वल्लभी के शासक ध्रुवसेन द्वितीय को पराजित किया।
  - इस समय ध्रुवसेन द्वितीय ने दद्द द्वितीय के दरबार में शरण ली, जिसके बाद दद्द द्वितीय ने हर्षवर्धन से उसका राज्य वापस दिला दिया।
  - इसका राज्य विस्तार उत्तर में माही से दक्षिण में कीम तक तथा पूर्व में मालवा व खानदेश से पश्चिम में समुद्र तक था।

जयभट्ट द्वितीय

- दद्द द्वितीय के बाद उसका पुत्र जयभट्ट द्वितीय शासक बना।
- यह चालुक्यों का सामन्त था।

दद्द तृतीय

- यह जयभट्ट द्वितीय का पुत्र था, जिसने पंचमहाशब्द तथा बहुसहाय नामक उपाधियाँ धारण की।
- इसने वल्मी के शासक शीलादित्य द्वितीय को पराजित किया था।

अध्याय - 6

आधुनिक राजस्थान

राजस्थान की रियासतें और ब्रिटिश संधियां				
क्र. सं.	संधिकर्त्ता राज्य	संधि के समय शासक	संधि की तिथि	अंग्रेज कम्पनी को दी जाने वाली खिराज राशि
1.	करौली	हरबक्षपालसिंह	9 नवम्बर, 1817	खिराज से मुक्त
2.	टोंक	अमीर खाँ	15 नवम्बर, 1817	-
3.	कोटा	उम्मेद सिंह	26 दिसम्बर, 1817	2,44,700 रु.
4.	जोधपुर	मानसिंह	6 जनवरी, 1818	1,08,000 रु.
5.	उदयपुर	भीमसिंह	22 जनवरी, 1818	राज्य की आय का 1/4 भाग
6.	बूँदी	विसनसिंह	10 फरवरी, 1818	80,000 रु.
7.	बीकानेर	सूरतसिंह	21 मार्च, 1818	मराठों को खिराज नहीं देता था, इसलिए खिराज से मुक्त
8.	किशनगढ़	कल्याणसिंह	7 अप्रेल , 1818	खिराज से मुक्त
9.	जयपुर	जगतसिंह	15 अप्रेल , 1818	संधि के प्रथम वर्ष कुछ नहीं, दूसरे वर्ष 4 लाख, चौथे वर्ष 6 लाख, पाँचवें वर्ष 7 लाख, छठें वर्ष 8 लाख फिर 8 लाख निश्चित।
10.	जैसलमेर	मूलराज	2 जनवरी, 1819	मराठों को खिराज नहीं देता था, अतः खिराज से मुक्त।
11.	प्रतापगढ़	सामन्तसिंह	5 अक्टूबर, 1818	धार राज्य को दिया जाने वाला खिराज अब कम्पनी को।
12.	डूंगरपुर	जसवन्त सिंह द्वितीय	1818 ई.	धार राज्य को दिया जाने वाला खिराज अब कम्पनी को।
13.	बाँसवाड़ा	उम्मेदसिंह	25 दिसम्बर, 1818	धार राज्य को दिया जाने वाला खिराज अब कम्पनी को।
14.	सिरोही	शिवसिंह	11 सितम्बर, 1823	संधि के तीन वर्ष तक खिराज से मुक्त उसके बाद आय के प्रति रुपये पर छः आना।
15.	झालावाड़	मदनसिंह	10 अप्रेल, 1838	80,000 रु. वार्षिक।

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रश्न- राजपूताना की निम्नलिखित रियासतों ने 1817-1818 ई. में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के साथ संधि पर हस्ताक्षर किये -(2013)

(1) कोटा (2) जोधपुर
(3) करौली (4) उदयपुर

निम्नलिखित में से कौन-सा अनुक्रम, कालाक्रमानुसार सही है ?

(a) (1), (2), (3), (4)
(b) (3), (4), (1), (2)
(c) (4), (1), (2), (3)
(d) (3), (1), (2), (4) **(d)**

- 1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के साथ ही राजपूत राज्यों पर मुगल केन्द्रीय सत्ता का नियंत्रण ढीला पड़ गया।
- सभी राजपूत राज्य अपने राज्य का विस्तार करने तथा पड़ोसी राज्य पर राजनैतिक वर्चस्व स्थापित कर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के प्रयत्न में लग गए।
- इस प्रकार के प्रयत्नों के फलस्वरूप राजपूत राज्यों में पारस्परिक संघर्ष बढ़ गये।
- शासकों ने पारस्परिक संघर्षों में सहायता प्राप्त करने के लिए बाहरी ताकतों (मराठा, अंग्रेज, होल्कर आदि) का सहारा लेने लगे।
- जब राज्यों में उत्तराधिकार संघर्ष में मराठों का हस्तक्षेप हुआ तो राजपूताना के शासकों ने मराठा के विरुद्ध ईस्ट इण्डिया कम्पनी से सहायता माँगी लेकिन अंग्रेजों ने इन प्रस्तावों पर ध्यान नहीं दिया क्योंकि उस समय अंग्रेजों की नीति राजपूताना के लिए मराठों से युद्ध करने की नहीं थी।
- भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी का आगमन 1600 ई. में हुआ था।
- 1757 ई. में प्लासी युद्ध के पश्चात् ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने पहली बार भारत में बंगाल में) राजनीतिक सत्ता प्राप्त की।
- रॉबर्ट क्लाइव सन् 1757 में बंगाल का प्रथम गवर्नर बना।
- 1764 ई. के बक्सर युद्ध के पश्चात् हुई इलाहाबाद संधि ने कम्पनी को भारत में पूर्णतः राजनीतिक शक्ति प्रदान की।
- वारेन हेस्टिंग्स 1772 ई. में बंगाल के प्रथम गवर्नर जनरल बने।
- वारेन हेस्टिंग्स ने सुरक्षा घेरे की नीति (पॉलिसी ऑफ रिंग फेंस) को अपनाया जिसके अनुसार कम्पनी द्वारा अपने अधिकृत प्रदेशों को शत्रुओं से सुरक्षा के लिए पड़ौसी राज्यों के साथ मैत्री संधि कर उन्हें बफर राज्यों के रूप में प्रयुक्त किया जाता था।
- लॉर्ड कार्नवालिस ने भारतीय शासकों के मामलों में अहस्तक्षेप की नीति अपनाई ।
- 1798 ई. में लॉर्ड वेलेजली ने देशी राज्यों के साथ सहायक संधि की नीति अपनाई।
- इस नीति के तहत देशी राज्यों की आंतरिक सुरक्षा व विदेशी नीति का उत्तरदायित्व अंग्रेजों पर था जिसका खर्च संबंधित राज्य को उठाना पड़ता था।
- कम्पनी इस हेतु उस राज्य में एक अंग्रेज रेजीडेन्ट की नियुक्ति करती थी एवं सुरक्षा हेतु उस देशी राज्य के खर्च पर अपनी सेना रखती थी।
- भारत में प्रथम सहायक संधि 1798 ई. में हैदराबाद के निजाम के साथ की गई।
- अगस्त 1803 ई. में आंग्ल-मराठा के द्वितीय युद्ध में मराठों की पराजय के पश्चात् मराठा पेशवा दौलतराव द्वारा 30 दिसम्बर, 1803 को अंग्रेजों के साथ सुर्जीअर्जन गाँव संधि कर जयपुर एवं जोधपुर राज्यों को अंग्रेजों को सौंप दिया।
- राजस्थान में सर्वप्रथम भरतपुर राज्य के महाराजा रणजीतसिंह के साथ 29 सितम्बर 1803 को लॉर्ड वेलेजली ने सहायक संधि की।
- आपसी अविश्वास के कारण यह संधि क्रियान्वित न हो पायी। इससे रुष्ट होकर लॉर्ड लेक के नेतृत्व में अंग्रेजों ने 5 बार भयंकर आक्रमण किये लेकिन अंग्रेज भरतपुर को जीतने में असफल रहे एवं अप्रैल 1805 में नई संधि हुई जिसमें भरतपुर की पूर्व की स्थिति रखी गई, भरतपुर राज्य की सीमा एवं क्षेत्रफल में कोई परिवर्तन नहीं किया गया तथा भरतपुर को डीग (वर्तमान डीग जिला) क्षेत्र लौटा दिया गया।
- अलवर प्रथम राज्य था जिसने ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी के साथ विस्तृत रक्षात्मक एवं आक्रामक संधि की थी।
- अंग्रेजों द्वारा जयपुर के महाराजा जगतसिंह द्वितीय के साथ 12 दिसम्बर, 1803 को संधि की गई।
- 1805 ई. में यह संधि भंग कर दी गई लेकिन मराठा सरदार एवं पिंडारियों के आतंक ने जयपुर-अंग्रेजों को पुनः संधि करने के लिए बाध्य कर दिया।
- 2 अप्रैल, 1818 को ईस्ट इण्डिया कम्पनी एवं जयपुर राज्य के मध्य पुनः संधि हुई।
- जोधपुर शासक भीमसिंह के समय जोधपुर राज्य के साथ 22 दिसम्बर, 1803 को संधि की गई। इस संधि की प्रमुख शर्तें एक-दूसरे को सहायता देने, परस्पर मित्रता बनाए रखने की थी ।
- खिराज नहीं देने एवं जोधपुर राज्य में किसी फ्रांसीसी को नौकरी नहीं देने अथवा देने से पूर्व कम्पनी से सलाह मशविरा करना आदि थी।
- 1813 ई. में लॉर्ड हेस्टिंग्स के गवर्नर जनरल बनने के बाद कम्पनी सरकार की नीति में परिवर्तन आया।
- लॉर्ड हेस्टिंग्स ने घेरे की नीति के स्थान पर अधीनस्थ पार्थक्य की नीति को क्रियान्वित किया।

1817-18 की अधीनस्थ संधि

- 1818 ई. में राजपूत राज्यों के साथ संधियाँ करने के लिए लॉर्ड हेस्टिंग्स ने दिल्ली रेजीडेन्ट चार्ल्स मेटकॉफ को कार्य सौंपा। मेटकॉफ ने राज्य के प्रतिनिधियों से बातचीत कर संधि पत्र तैयार किये।
- सन् 1811 में चार्ल्स मेटकॉफ ने राजस्थान के राजपूत शासकों का एक परिसंघ बनाने का सुझाव दिया जो ब्रिटिश संरक्षण में कार्य करे।

- राजस्थान में अधीनस्थ पार्थक्य की नीति (1818 की संधि) को स्वीकार करने वाली पहली रियासत - करौली।
- (9 नवम्बर 1817) अधीनस्थ पार्थक्य संधि स्वीकार करने के समय करौली का शासक- हरबक्षपाल सिंह थे ।
- अधीनस्थ पार्थक्य की संधि को स्वीकार करने वाला अंतिम राज्य- सिरोही (11 सितम्बर 1823) यहाँ के शासक महाराजा शिव सिंह थे।

प्रश्न- निम्नलिखित में से किसने राजपूताना की देशी रियासतों के साथ 1817-18 की अधीनस्थ संधि की बातचीत की थी ? (RAS. 2016)
(A) डेविड ऑक्टरलोनी
(B) चार्ल्स मैटकॉफ
(C) आर्थर वेलेजली
(D) जॉन जॉर्ज **(2)**

<u>अधीनस्थ पार्थक्य संधि (1818) की शर्तें</u>

1. अंग्रेजी कम्पनी एवं संधिकर्त्ता राज्य के साथ सदैव मित्रता के समन्ध बने रहेंगे। एक के मित्र तथा शत्रु दोनों के मित्र और शत्रु समझे जाएँगे।
2. संधिकर्त्ता राज्य की रक्षा करने का दायित्व कम्पनी का होगा।
3. संधिकर्त्ता राज्य कम्पनी का आधिपत्य स्वीकार करेगा और कम्पनी सरकार के अधीन रहते हुए सदैव सहयोग प्रदान करेंगे।
4. ये राज्य अन्य किसी राज्य के साथ राजनीतिक सम्बन्ध नहीं रखेंगे और न ही किसी के साथ संधि व युद्ध करेंगे। यदि किसी पड़ोसी राज्य के साथ झगड़ा हो जाएगा, तो वे उसमें कम्पनी की मध्यस्थता स्वीकार करेंगे।
5. संधिकर्ता राज्यों के शासक व उनके उत्तराधिकारी अपने राज्य के स्वतंत्र शासक होंगे।
6. कम्पनी इन राज्यों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगी।
7. जो राज्य पहले मराठों को खिराज देते थे, वे ही अब कम्पनी को खिराज देंगे।

<u>कोटा राज्य के साथ संधि</u>

26 दिसम्बर, 1817 को कोटा के मुख्य प्रशासक झाला जालिमसिंह एवं गवर्नर जनरत के विशेष प्रतिनिधि चार्ल्स मेटकॉफ के मध्य 1818 की संधि की गई । इस संधि में 11 धाराएँ थीं।

11 वीं धारा में संधि पत्र पर हस्ताक्षर करने वालों के नाम हैं।

<u>संधि की शर्तें</u>

1. कम्पनी सरकार व कोटा राज्य के मध्य पारस्परिक मित्रता एवं सद्भावना सदैव बनी रहेगी।
2. एक पक्ष का मित्र एवं शत्रु दूसरे पक्ष का भी मित्र एवं शत्रु होगा।
3. कम्पनी सरकार कोटा राज्य को सैनिक प्रदान करेगी एवं आवश्यकता पड़ने पर कोटा राज्य द्वारा कम्पनी सरकार को सैनिक सहायता प्रदान करेगा।
4. कोटा राज्य कम्पनी सरकार की अनुमति के बिना किसी अन्य शक्ति से युद्ध एवं मैत्री संधि नहीं करेगा।
5. कोटा महाराव एवं उसके उत्तराधिकारी किसी अन्य शक्ति से विवाद होने पर अंग्रेजों को मध्यस्थ बनाएंगे।
6. कोटा राज्य मराठों को जो खिराज देता था, वह अब कम्पनी सरकार को देगा।
7. कोटा के महाराव एवं उनके उत्तराधिकारी अपने राज्य के शासक बने रहेंगे। कम्पनी उनके आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगी।
8. कोटा महाराव और उसके उत्तराधिकारी सदैव अंग्रेज सरकार की अधीनता में रहते हुए उसे सहयोग देते रहेंगे।

20 फरवरी, 1818 को झाला जालिमसिंह द्वारा अंग्रेजों से पूरक संधि कर दो नयी शर्तें जोड़ी गई।

<u>राजस्थान में 1857 की क्रांति में हुए प्रमुख विद्रोह</u>

- कर्नल जेम्स टॉड पहला व्यक्ति था जिसने राजस्थान का सर्वप्रथम सुव्यवस्थित इतिहास लिखा इसीलिए कर्नल जेम्स टॉड को राजस्थान के इतिहास का पिता कहा जाता है ।
- इतिहासकार गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने कर्नल जेम्स टॉड के इतिहास लेखन की गलतियों को दूर किया इसीलिए गौरीशंकर हीराचंद ओझा को राजस्थान के इतिहास का वैज्ञानिक पिता कहा जाता है ।
- घोड़े वाले बाबा उपनाम से इतिहास में प्रसिद्ध कर्नल जेम्स टॉड के गुरु ज्ञानचंद थे । कर्नल जेम्स टॉड ने पृथ्वीराज रासो के लगभग 30000 हजार दोहो, का अंग्रेजी में अनुवाद किया था ।
- ब्रिटिश सरकार ने कर्नल जेम्स टॉड को 1818 से 1822 के मध्य पश्चिमी राजपूत राज्यों का पॉलिटिकल एजेंट नियुक्त किया जिसमें 6 रियासतें शामिल थी

  1-कोटा
  2- बूँदी
  3-जोधपुर
  4-उदयपुर
  5-सिरोही
  6-जैसलमेर

1857 के विद्रोह के संदर्भ में विभिन्न मत

- डॉ. रामविलास शर्मा- यह स्वतंत्रता संग्राम था ।
- डॉ. रामविलास शर्मा– यह जनक्रांति थी ।
- डिजरायली बेंजामिन डिजरैली – यह राष्ट्रीय विद्रोह था।
- वी. डी. सावरकर- यह स्वतंत्रता की पहली लड़ाई थी (पुस्तक द इंडियन वॉर ऑफ इंडिपेंडेंस) ।
- एस.एन. सेन- यह विद्रोह राष्ट्रीयता के अभाव में स्वतंत्रता संग्राम था ।
- सर जॉन लॉरेंस, के. मैलेसन, ट्रैविलियन, सीले- 1857 की क्रांति एक सिपाही विद्रोह था (इस विचार से भारतीय

राजस्थान में प्रजामण्डल					
क्र.सं.	प्रजामण्डल नाम	स्थापना वर्ष	गठनकर्ता	अध्यक्षता	प्रमुख नेता / उद्देश्य कार्य / सहयोगी
1.	जयपुर प्रजामण्डल	1931	जमनालाल बजाज	कपूर चन्द्र पाटनी	हीरालाल शास्त्री, जमनालाल बजाज
		1936			हीरालाल शास्त्री, बाब हरिश्चन्द्र, टीकाराम पालीवाल, लादूराम जोशी, हंस डी. राय. पूर्णानन्द जोशी
2.	बूँदी प्रजामण्डल	1931	कांतिलाल	कांतिलाल	नित्यानन्द सागर, गोपाललाल कोटिया,गोपाललाल जोशी, मोतीलाल अग्रवाल,पूनम चन्द्र
	बूँदी राज्य प्रजा परिषद्	1937	ऋषिदत्त मेहता	चिरंजीलाल मिश्र	बृज सुन्दर शर्मा
3.	हाड़ौती प्रजामण्डल	1934	पं. नयनूराम शर्मा	हरिमोहन माथुर	प्रभुलाल शर्मा, पं. अभिन्न हरि
4.	मारवाड़ (जोधपुर) प्रजामण्डल	1934	जयनारायण व्यास	मोहम्मद	आनन्दराज सुराणा, मथुरादास माथुर, रणछोड़दास गट्टानी, इन्द्रमल जैन, कन्हैयालाल मणिहार, चांदकरण शारदा, छगनलाल चौपसनीवाल, अभयमल मेहता
5.	सिरोही प्रजामण्डल (बम्बई)	1934	वृद्धिकर त्रिवेदी	भंवरलाल सराफ	रामेश्वर दयाल, समर्थमल, भीमशंकर
	सिरोही प्रजामण्डल	1939	गोकुल भाई	गोकुल भाई	धर्मचन्द्र सुराणा, रामेश्वरदयाल, रूपराज, जीवनमल, घासीलाल चौधरी, पूनमचन्द्र
6.	बीकानेर राज्य प्रजामण्डल (कलकत्ता)	1936	मघाराम वैद्य	मघाराम वैद्य	लक्ष्मणदास स्वामी एवं अन्य राजस्थानी प्रवासी
	बीकानेर प्रजामण्डल	1936	मघाराम वैद्य	मघाराम वैद्य	लक्ष्मणदास स्वामी, रघुवरदयाल गोयल, बाबू मुक्ता प्रसाद, गंगाराम कौशिक
	बीकानेर राज्य परिषद्	1942	रघुवरदयाल गोयल	रघुवरदयाल गोयल	लक्ष्मणदास स्वामी, रघुवरदयाल गोयल, बाबू मुक्ता प्रसाद, गंगाराम कौशिक
7.	कोटा प्रजामण्डल	1939	पं. नयनूराम शर्मा	पं. नयनूराम शर्मा	पं. अभिन्न हरि, तनसुखलाल मित्तल, शंभूदयाल सक्सेना, बेनी माधव प्रसाद
8.	मारवाड़ लोक	1938	जयनारायण व्यास	रणछोड़दास	आनन्दराज सुराणा और भंवरलाल
9.	मेवाड़ प्रजामण्डल	1938	माणिक्यलाल वर्मा	बलवंत सिंह मेहता	माणिक्य लाल वर्मा, भूरेलाल बयां, भवानी शंकर वैद्य, जमनालाल वैद्य. परसराम, दयाशंकर श्रोत्रिय
10.	अलवर प्रजामण्डल	1938	पं. हरि नारायण शर्मा	पं. हरि नारायण शर्मा	कुंजबिहारी मोदी, लक्ष्मणस्वरूप त्रिपाठी, इन्द्रसिंह आजाद, नत्थू राम मोदी, मंगलसिंह

राजस्थान का कला, संस्कृति, साहित्य, परम्परा एवं विरासत

अध्याय- 1

राजस्थान की वास्तु परम्परा

मंदिर :-

भारत में मंदिर निर्माण का प्रारंभिक व प्रायोगिक काल गुप्तकाल के प्रारंभ से सातवीं शताब्दी तक का काल माना जाता है।

राजस्थान में मंदिर निर्माण की शैलियां-

(1.) नागर या आर्य शैली-

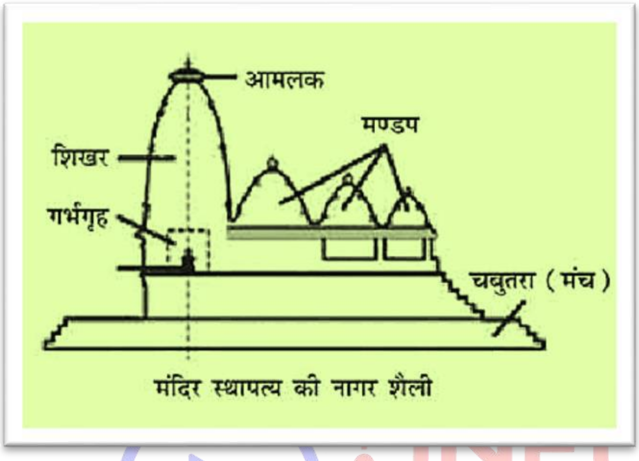

- उत्तरी भारत की शैली जिसमें मंदिर ऊँचे चबूतरे पर बना होता है।
- मंदिर का शिखर आमलक और कलश में विभेदित होता है।
- मंदिर में मूर्ति वाला स्थान गर्भगृह वर्गाकार होता है।
- पर्सी ब्राउन ने नागर शैली को उत्तर भारतीय आर्य शैली कहा ।
- राजस्थान ने प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ है, निम्न है- किराडू का सोमेश्वर मंदिर (बाड़मेर), जगत अम्बिका मंदिर (उदयपुर),दधिमति माता मंदिर (नागौर),ओसिया के मंदिर (जोधपुर ग्रामीण)।

(2.) भूमिज शैली

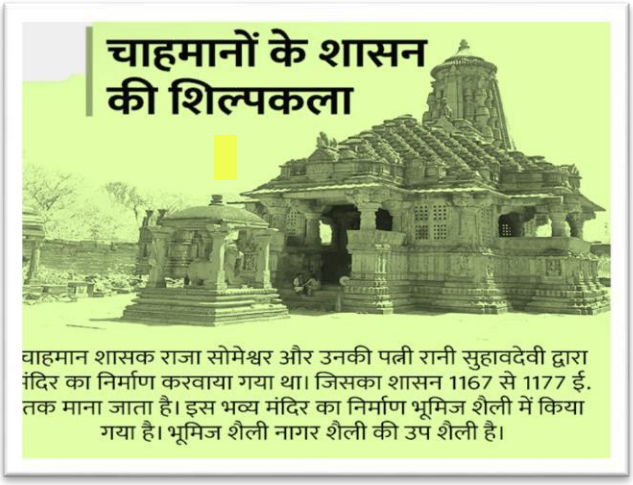

- यह नागर शैली के अंतर्गत आती है।
- इसमें प्रदक्षिणा पथ खुला होता है।
- भूमिज शैली का सबसे प्राचीन मंदिर पाली में स्थित सेवाड़ी जैन मंदिर है।
- राजस्थान ने प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ है, निम्न है- उंडेश्वर मंदिर (बिजौलिया) 1025 ई., महानालेश्वर मंदिर (मैनाल, भीलवाड़ा) 1075 ई. अद्भुत नाथ जी का मंदिर (चित्तौड़गढ़)।

(3.) द्रविड़ शैली

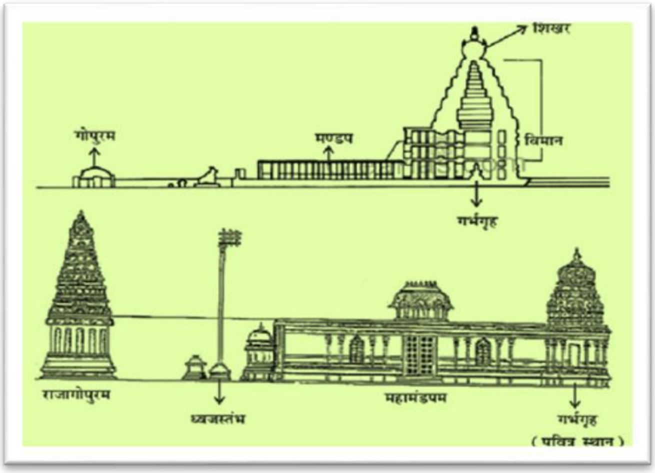

- दक्षिणी भारत की शैली।
- इस शैली में देव मूर्ति वाले गर्भ गृह के ऊपर ऊँचे विमान या पिरामिड बने होते है। जो अलंकृत होते है।
- इनमें बनाया गया गर्भगृह आयताकार होता है।
- मंदिर का मुख्य द्वार गोपुरम कहलाता है।
- द्रविड़ शैली का राजस्थान में सबसे प्राचीन मंदिर धौलपुर में स्थित चौपड़ा मंदिर है।
- राजस्थान ने प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ है, निम्न है- रंग नाथ (पुष्कर, अजमेर), महादेव मन्दिर (झालावाड़)।

(4.) पंचायन शैली

- इसमें मुख्य मंदिर विष्णु को समर्पित होता है।
- इसके अलावा चार अन्य देव मंदिर सूर्य, शक्ति ,शिव व गणेश के होते है।
- ये मंदिर मुख्य मंदिर के चारों कोनों पर होते है तथा पाँचों का परिक्रमा पथ एक ही होता है।

- राजस्थान ने प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ है, निम्न है- ओसियां के हरिहर मंदिर (जोधपुर), बूढादीत सूर्य मंदिर (कोटा), भंवाल माता (नागौर), जगदीश मंदिर (उदयपुर)।

❖ राजस्थान के प्रमुख मंदिर

मौर्यकालीन मंदिर (300 ई.पू.)	नगरी (चित्तौड़गढ़) नांद (पुष्कर,अजमेर) बैराठ (कोटपूतली-बहरोड़)
गुप्त कालीन मंदिर (300 से 700 ई.)	चार चौमा शिवालय (कोटा), कन्सुआ (कोटा)
गुर्जर प्रतिहार या महामारू शैली (700 ई. से 1000 ई.)	ओसिया के मंदिर (जोधपुर ग्रामीण) जगत अम्बिका मंदिर (उदयपुर) , कुभ श्याम मंदिर (चितौड़), कालिका माता मंदिर (चित्तौड़ गढ़) किराड़ू का सोमेश्वर मंदिर (बाड़मेर), दधिमति माता मंदिर (नागौर) हर्षद माता (आभानेरी,दौसा), हर्षनाथ मंदिर (सीकर), आउवा कामेश्वर मंदिर (पाली)
सोलंकी मंदिर (चालुक्य) / महागुर्जर शैली (11 वीं से 13 शताब्दी)	दिलवाड़ा के जैन मंदिर (सिरोही) समाद्धिश्वर मंदिर (मोकल मंदिर) सच्चिया माता मंदिर (ओसिया, जोधपुर ग्रामीण)

1. राजस्थान के निम्नलिखित मंदिरों में से गुर्जर - प्रतिहार काल में निर्मित मंदिरों को चुनिए। [2016]
(1) आहड़ का आदिवराह मंदिर
(2)आभानेरी का हर्षमाता का मंदिर
(3) राजोरगढ़ का नीलकंठ मंदिर
(4) ओसियाँ का हरिहर मंदिर
कूट :
(a)1 , 2 , 3 और 4 (b)1 , 2 और 4
(c) 1 और 4 **(d)2 और 4**

❖ सोमेश्वर मंदिर किराड़ू (बाड़मेर)

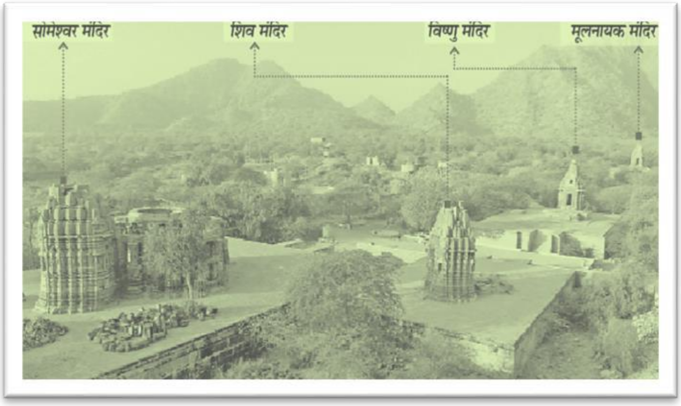

- यह मन्दिर हाथमा गाँव, किराडू (बाड़मेर) में स्थित है।
- किराडू का पुराना नाम किरात कूप है जो परमार राजाओं की राजधानी थी।
- इस मंदिर की मूर्तिकला को देखकर इसे 'मूर्तियों का खजाना' कहा जाता है।
- इन मन्दिरों में कुल पाँच मन्दिर हैं जिसमें चार भगवान शिव के तथा एक भगवान विष्णु का है।
- इन मन्दिरों का मूल निर्माण की शैली नागर या आर्य शैली है।
- किराडू के मंदिरों को राजस्थान का खजुराहों कहते है। 1178 ई. में मुहम्मद गौरी ने इस मंदिर पर आक्रमण किया था। इस मंदिर के सामने पहाड़ी पर महिषासुर मर्दिनी की एक त्रिपाद मूर्ति है।

❖ शीतलेश्वर महादेव का मंदिर (झालावाड़)

- यह झालरापाटन, झालावाड़ में स्थित है।
- यह मंदिर महामारू शैली में बना है।
- यह राजस्थान का प्रथम तिथियुक्त (689 ई.) मंदिर है।
- इसका निर्माण दुर्गाण के सामन्त वाप्पक ने करवाया।
- यह मन्दिर चन्द्रभागा नदी के किनारे स्थित है
- झालरापाटन 'घंटी वाले मंदिरों का शहर ' कहलाता है।
- इसे चन्द्रमौलिश्वर महादेव मन्दिर कहा है।
- यहाँ अर्द्धनारीश्वर की मूर्ति स्थापति है।

❖ ब्रह्मा जी का मंदिर (पुष्कर, अजमेर)

- यह पुष्कर, अजमेर में स्थित विश्व का प्रथम ब्रह्मा मन्दिर है।

- इस मन्दिर का निर्माण गोकलचंद पारीक ने करवाया था लेकिन कुछ किंवदंतियों के अनुसार इस मंदिर का प्रारम्भिक निर्माण शंकराचार्य ने करवाया था।
- इस मंदिर को राष्ट्रीय महत्व का स्मारक घोषित किया गया है।
- इस मन्दिर के परिसर में पंचमुखी महादेव, लक्ष्मीनारायण, गौरीशंकर, पातालेश्वर महादेव, नारद और नवग्रह के छोटे - छोटे मन्दिर बने हुए हैं।
- NOTE- राजस्थान में स्थित अन्य प्रमुख ब्रह्मा मंदिर छींछ गाँव (बाँसवाड़ा) में तथा आसोतरा बाड़मेर में स्थित हैं।

ब्रह्मा मन्दिर (छींछ,बाँसवाड़ा) - इस मन्दिर का निर्माण ने 12वीं सदी में जगमाल सिसोदिया करवाया। यहाँ नवग्रहों का मन्दिर तथा ब्रह्म घाट स्थित है।
ब्रह्मा मंदिर (आसोतरा,बाड़मेर) - इसका निर्माण संत खेतरामजी महाराज ने करवाया।

❖ सावित्री मन्दिर (पुष्कर, अजमेर)

- सावित्री मंदिर का निर्माण रत्नागिरि पर्वत पुष्कर, अजमेर में गोकुलचंद पारीक ने करवाया था।
- सावित्री जी का मेला भाद्रपद शुक्ल सप्तमी को भरता है।
- यहाँ मई, 2016 में राजस्थान का तीसरा रोप वे बनाया गया था।
- कुछ जन अनुश्रुतियों के अनुसार यज्ञ के समय सावित्री माता अपने पति ब्रह्मा से रुठकर यहाँ चली आयी थीं। यहीं सावित्री माता ने ब्रह्माजी को श्राप दिया था कि उनकी पूजा पुष्कर के अतिरिक्त कहीं नहीं होगी।

❖ एकलिंगनाथजी के मंदिर (कैलाशपुरी, उदयपुर)

- इस मन्दिर का निर्माण 734 ई. में बप्पा रावल (कालभोज) ने करवाया।
- राणा मोकल ने इसका जीर्णोद्धार करवाया था।
- इस मन्दिर में एकलिंगजी की चतुर्मुखी काले पत्थर की मूर्ति है।
- इसमें उत्तर मुख को ब्रह्मा, दक्षिण मुख को शिव, पूर्व मुख को सूर्य, पश्चिम मुख को विष्णु कहा जाता है।
- यह मन्दिर लकुलीश मन्दिर कहलाता है। राजस्थान में पाशुपत सम्प्रदाय (लकुलीश सम्प्रदाय) का यह एकमात्र मन्दिर है।
- एकलिंगजी को मेवाड़ शासक अपना वास्तविक राजा मानते हैं।
- इस मंदिर की तलहटी में महाराणा कुम्भा द्वारा निर्मित विष्णु मंदिर है,जिसे लोग ' मीराबाई का मंदिर' भी कहते है ।

❖ ऋषभदेव मंदिर धूलेव (उदयपुर)

- ऋषभदेवजी (आदिनाथ जी) का मंदिर धूलेव (उदयपुर) में स्थित है।
- वैष्णव धर्म के अनुयायी, ऋषभदेव जी को विष्णु का अवतार मानते है।
- आदिवासी लोग ऋषभदेवजी को 'कालाजी ' के नाम से जानते है।
- इस मन्दिर में सर्वाधिक केसर का भोग लगने के कारण इसे केसरियानाथ जी का मंदिर भी कहते है।
- यह मंदिर कोयल नदी के तट पर स्थित है तथा 1100 खम्भों पर बना है।
- इस मन्दिर में 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ की पद्मासन मुद्रा में मूर्ति है।
- यहाँ पर चैत्र कृष्ण अष्टमी को मेला भरता है। यहाँ दिगम्बर, श्वेताम्बर, वैष्णव, शैव मन्दिर हैं।
- भारत का यह एकमात्र ऐसा मंदिर है जिसमें वैष्णव तथा मुस्लिम समान रूप से पूजा करते हैं।
- कोर्ट के आदेशानुसार मंदिर की पूजा जैन करते है इस कारण यह मन्दिर जैनों व भील जनजाति के मध्य विवादित बना हुआ है।

❖ जगत अम्बिका मन्दिर (उदयपुर)

- आदिवासी अपने पूर्वजों की अस्थियों का यहाँ विसर्जन करते हैं।
- यहाँ माघ पूर्णिमा को मेला भरता है।
- भारत का यह एकमात्र मंदिर जिसमें खंडित शिवलिंग की पूजा होती है।
- यहाँ भगवान श्री निष्कलंक मावजी महाराज ने 16 कलाओं से परिपूर्ण भगवान श्री कृष्ण के अधूरे रास को पूर्ण किया।

❖ **<u>बुड्ढा जोहड़ (रायसिंहनगर, श्रीगंगानगर)</u>**

- इसे राजस्थान का अमृतसर भी कहते है।
- इसका निर्माण बाबा फतेहसिंह ने करवाया।
- श्रावण अमावस्या को यहाँ विशाल मेला भरता है (जबकिसिक्खों का राजस्थान में सबसे बड़ा मेला कार्तिक पूर्णिमा के दिन साहवा (चूरू) में भरता है।
- अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर के बाद यह भारत का सबसे बड़ा गुरुद्वारा माना जाता है।

❖ **<u>तनोट माता का मन्दिर (तनोट, जैसलमेर)</u>**

- इन्हें सैनिकों की देवी, थार की वैष्णो देवी, रुमाल वाली देवी व बी. एस. एफ. के जवानों की देवी कहते हैं।
- वर्तमान में सीमा सुरक्षा बल की 139वीं वाहिनी के जवान माता के पुजारी हैं।
- वर्ष 1965 के भारत - पाक युद्ध में पाकिस्तानी सेना की ओर से मंदिर के इलाके में करीब 3000 बम गिराए थे, लेकिन मंदिर को कोई नुकसान नहीं हुआ और सभी बम बेअसर हो गए थे।
- इस मंदिर परिसर में लगे शिलालेख के अनुसार जैसलमेर क्षेत्र के निवासी मामडियांजी की पहली संतान के रूप में विक्रम संवत् 808 चैत्र सुदी नवमी मंगलवार को भगवतीश्री आवड़देवी यानी तनोट माता का जन्म हुआ था।
- माता की 6 बहनें आशी, सेसी, गेहली, होल, रूप और लांग थीं। देवी मां ने जन्म के बाद क्षेत्र में बहुत से चमत्कार दिखाए और लोगों का कल्याण किया।
- इस क्षेत्र में राजा भाटी तनुरावजी ने वि.सं. 847 में तनोट गढ़ की नींव रखी थी। इसके बाद यहाँ देवी माँ का मंदिर बनवाया गया और वे तनोट राय माता के नाम से प्रसिद्ध हुईं।

❖ **<u>सुन्धा माता मन्दिर (जसवंतपुरा, जालौर)</u>**

- सुंधा माता मंदिर का निर्माण जालोर के चौहान शासक चाचिगदेव ने विक्रम संवत् 1319 में अक्षय तृतीया को की थी।
- यह मन्दिर सुन्धा पर्वत पर स्थित है।
- सुंधामाता को अघटेश्वरी कहा जाता है जिसका अभिप्राय है- वह घट (धड़) रहित देवी, जिसका केवल सिर ही पूजा जाता है।
- इस मन्दिर में 20 दिसम्बर, 2006 में राजस्थान का प्रथम रोप-वे स्थापित किया गया।
- सुंधा माता इलाके को प्रदेश का पहला और देश का चौथा भालू अभ्यारण्य बनाया गया।

❖ **<u>कंसुआ का शिव मन्दिर (कोटा)</u>**

- इस मंदिर में मिले शिलालेख के अनुसार मंदिर का निर्माण 738 ई. में मौर्यवंशी नरेश धवल के सामंत ब्राह्मण राजा शिवगण ने करवाया था।
- यहाँ 1008 मुखी शिवलिंग बने हुए हैं। इस मन्दिर में चतुर्मुखी शिवलिंग की पूजा होती है।
- यह दुनिया का एकमात्र मंदिर है जहाँ भगवान शिव के साथ उनका पूरा परिवार विराजमान है।

• राजस्थान के प्रमुख नृत्य

➢ **शास्त्रीय नृत्य**

- राजस्थान का एकमात्र शास्त्रीय नृत्य ' कथक ' हैं ।
- कथक नृत्य के प्रवर्तक भानुजी को माना जाता हैं।
- जयपुर घराना कथक नृत्य का आदिम घराना हैं।
- वर्तमान में कथक नृत्य उत्तर भारत का शास्त्रीय नृत्य हैं कथक नृत्य के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकार बिरजू महाराज हैं।
- अन्य कलाकार प्रेरणा श्रीमाली , उदयशंकर ।

➢ **लोकनृत्य**

- लोकनृत्य वह कला है, जिसके द्वारा हाव-भाव, अंग संचालन, भाव भंगिमाओं के माध्यम से मनोदशा को व्यक्त करना एवं आनंद व उमंग से भरकर सामूहिक रूप से किए जाने वाले नृत्य ही लोकनृत्य कहलाते हैं।

➢ राज्य के प्रमुख लोकनृत्य को चार भागों में विभाजित किया गया है ।

1. **जनजातीयों के नृत्य**
2. **व्यवसायिक लोकनृत्य**
3. **जातीय नृत्य**
4. **क्षेत्रिय नृत्य**

❖ **राजस्थान के क्षेत्रीय लोकनृत्य**

➢ **घूमर**

- 'घूमर' शब्द की उत्पति 'घुम्म' से हुई है, जिसका अर्थ होता हैं, ' लहंगे का घेर ' ।
- घूमर में महिलाएं घेरा बनाकर 'घूमर लोकगीत' की धुन पर नाचती हैं ।
- घूमर के साथ आठ मात्रा के कहरवे की विशेष चाल होती हैं, जिसे सवाई कहते हैं ।
- घूमर नृत्य की उत्पति मध्य एशिया के भरंग नृत्य से मानी जाती हैं ।
- यह राजस्थान का राजकीय नृत्य है ।
- यह नृत्य मारवाड़ व मेवाड़ में राजघराने की महिलाओं द्वारा गणगौर पर किया जाता है ।
- राजस्थान की संस्कृति का पहचान चिह्न बन चुका ' घुमर 'नृत्य राजस्थान के' लोकनृत्यों की आत्मा ' कहलाता हैं।
- इसे सिरमौर नृत्य व नृत्यों की आत्मा सामंतशाही नृत्य , रजवाड़ी नृत्य, महिलाओं का सर्वाधिक लोकप्रिय नृत्य कहते हैं ।
- यह गरबा नृत्य की तरह किया जाता है ।
- घूमर- साधारण स्त्रियों द्वारा किया जाता है।
- झूमरिया- यह बालिकाओं द्वारा किया जाता हैं।

➢ **झूमर नृत्य**

- हाड़ौती क्षेत्र में स्त्रियों द्वारा मांगलिक अवसरों एवं त्यौहारों पर किया जाने वाला गोलाकार नृत्य जो डाण्डियों की सहायता से किया जाता हैं।

➢ **घुमरा नृत्य**

- इसे भील जनजाति की महिला करती हैं।
- यह गरबा जैसा होता हैं।
- यह मांगलिक अवसर पर किया जाता है ।
- यह अर्द्ध वृताकार घेरे में महिलायें करती हैं ।
- इस नृत्य में 2 दल होते हैं जिसमें एक दल गाता है तथा दूसरा नाचता हैं।

➢ **घूमर-घूमरा नृत्य**

- घूमर - घूमरा नृत्य राजस्थान का एकमात्र शोक सूचक नृत्य हैं।
- जो केवल वागड़ क्षेत्र के कुछ ब्राह्मण समुदाय में किया जाता है ।

➢ **ढोल नृत्य**

- राजस्थान के जालौर क्षेत्र में शादी के अवसर पर पुरुषों के द्वारा सामूहिक नृत्य करते हुए विविध कलाबाजियाँ दिखाते हैं।
- इस नृत्य को प्रकाश में लाने का श्रेय जयनारायण व्यास को जाता हैं।
- यह नृत्य ढोली, सरगरा, माली, भील आदि जातियों द्वारा किया जाता हैं।
- इस नृत्य में कई ढोल एवं थालियाँ एक साथ बजाए जाते हैं।
- ढोलवादकों का मुखिया थाकना शैली' में ढोल बजाना प्रारम्भ करता हैं।

➢ **घुड़ला नृत्य**

- घुड़ला नृत्य विशेष रूप से जोधपुर जिले में किया जाता है ।
- घुड़ला नृत्य युवतियों के द्वारा किया जाता है ।
- घुड़ला नृत्य में स्त्रियाँ सुंदर श्रृंगार करके गोलाकार पथ पर नृत्य करती है ।

- घुड़ला नृत्य करते समय महिलाओं के सिर पर छिद्रित मटके रखे होते हैं । जिनमें जलता हुआ दीपक रखा जाता है । इस मटके को ही घुड़ला कहते हैं ।
- शीतला अष्टमी (चैत्र कृष्णा -8) पर घुडले का त्यौहार मनाया जाता है ।
- घुड़ला नृत्य को सर्वप्रथम मारवाड़ में घुड़ले खाँ की बेटी गिंदोली ने गणगौर उत्सव के समय शुरू किया था ।
- यह नृत्य दिन में नहीं अपितु रात्रि में किया जाता है ।
- इसमें चाल मंद व मादक होती है व घुड़ले को नाजुकता से संभाला जाता है, जो दर्शनीय है ।
- **घुड़ला नृत्य से एक कथा जुड़ी हुई है-** एक बार मारवाड़ के पीपाड़ा नामक स्थान पर स्त्रियाँ तालाब पर गौरी पूजन कर रही थी तभी अजमेर का सूबेदार मल्लू खाँ 140 कन्याओं का हरण करके ले जाता है । जोधपुर नरेश सातल देव ने इनका पीछा किया। इनका भयंकर युद्ध हुआ, जिसमें मल्लू खाँ के सेनापति घुडले का सिर छिद्रित कर सातल देव द्वारा लाया गया तब से यह नृत्य किया जाता है ।

➢ **डांडिया नृत्य**

- यह मारवाड़ का प्रतिनिधि नृत्य है, जिसमें 10 – 15 पुरुष विभिन्न प्रकार की वेशभूषा में स्वांग भरकर गोले में डंडियों को आपस में टकराते हुए नृत्य करते हैं।
- यह मूलत : गुजरात का है।
- राजस्थान में यह मारवाड़ का प्रसिद्ध है।
- यह होली के बाद खेलते हैं।
- यह पुरुष प्रधान नृत्य है इसमें शहनाई व नगाड़ा मुख्य वाद्य होता है।
- इस नृत्य में बड़ली के भैरुजी का गुणगान किया जाता है।
- इस नृत्य में धमाल गीत गाये जाते हैं।

➢ **झाँझी नृत्य**

- झाँझी नृत्य मारवाड़ क्षेत्र में महिलाओं के द्वारा किया जाता है ।
- झाँझी नृत्य के अन्तर्गत छोटे मटकों मे छिद्र करके महिलाएं समूह में उनको धारण करके यह नृत्य करती हैं।

➢ **लुम्बर नृत्य**

- यह नृत्य स्त्रियों द्वारा होली पर किया जाता है ।
- यह नृत्य जालौर का प्रसिद्ध है ।
- इस नृत्य में ढोल , चंग वाद्य यंत्र काम में लिये जाते हैं।

➢ **गैर नृत्य**

- यह मुख्यत: फाल्गुन मास में भील पुरुषों के द्वारा किया गोल घेरे की आकृति में होने के कारण इस नृत्य का नाम धेर पड़ा । जो आगे चलकर गैर कहलाया ।
- गैर नृत्य करने वाले नृत्यकार गैरिये कहलाते हैं ।
- मेवाड़ व बाड़मेर क्षेत्र में गैर नृत्य किया जाता है ।
- यह नृत्य होली के अवसर पर किया जाता है ।
- गैर नृत्य के प्रमुख वाद्य यन्त्र ढ़ोल - बाकिया - थाली है ।
- प्रत्युत्तर में गाये जाने वाले श्रृंगार रस एवं भक्ति रस के गीत फाग कहलाते है ।
- गैर नृत्य में प्रयुक्त होने वाली छड को खाडा कहा जाता है ।
- मेवाड़ में लाल / केसरिया पगड़ी पहनी जाती है ।
- बाड़मेर में सफेद आंगी (लम्बा फ्राक) कमर पर चमड़े का पट्टा व तलवार आदि लेकर नृत्य किया जाता है ।
- गैर नृत्य की प्रमुख विशेषता विचित्र वेशभूषा का प्रदर्शन है।
- भीलवाड़ा का **घूमर गैर** अत्यन्त प्रसिद्ध है ।
- मेणार / मेनार गाँव (उदयपुर) के ऊंकारेश्वर चौराहे पर चैत्र माह के कृष्ण पक्ष की द्वितीया / जमरा बीज को **तलवारों की गैर** खेली जाती है ।
- नाथद्वारा (राजसमंद) में शीतला सप्तमी (चैत्र कृष्ण सप्तमी) से एक माह तक गैर नृत्य का आयोजन होता है ।
- **आंगी - बांगी गैर नृत्य** यह चैत्र शुक्ल तृतीया के दिन किया जाता है। यह गैर लाखेटा गाँव (बाड़मेर) की प्रसिद्ध है ।

➢ **बिंदौरी नृत्य**

- राज्य के झालावाड़ क्षेत्र में होली या विवाह के अवसर पर गैर के समान किया जाने वाला लोकनृत्य।
- यह पुरुष प्रधान नृत्य है।

➢ **चंग नृत्य**

अभ्यास प्रश्न

1. शुद्धि आंदोलन का संबंध किस लोकदेवता से है ?
A. पाबूजी B. गोगाजी
C. रामदेव जी D. तेजाजी **(C)**

2. चौबीस बाणियां नामक ग्रंथ का संबंध किस लोकदेवता से है ?
A. पाबूजी B. गोगाजी
C. रामदेव जी D. तेजाजी **(C)**

3. गोगाजी के जागरण में प्रयोग किया जाने वाला वाद्य यंत्र कौन सा है ?
A. रावण हत्था B. बांसुरी
C. डेरु D. चंग **(C)**

4. गोगामेडी का निर्माण किसने करवाया जिसके मुख्य द्वार पर बिस्मिल्लाह अंकित है ?
A. अलाउद्दीन खिलजी
B. शेरशाह सूरी
C. गंगा सिंह
D. फिरोज़ शाह तुगलक **(D)**

5. ' भूरिया बाबा ' आराध्य देवता हैं
A. गोड़वाड़ के मीणाओं के
B.देवड़ा के राजपूतों के
C. अजमेर के चौहानों के
D. उदयपुर के सिसोदियों के **(A)**

6. बालोतरा जिले में तिलवाड़ा गाँव में स्थित मंदिर किस लोकदेवता से सम्बन्धित है ? .
A. गोगाजी B. बाबा रामदेव
C. मेहाजी D. मल्लीनाथजी **(D)**

7. निम्न में से कौन राजस्थान के लोकदेवता नहीं है ?
A. नामदेव जी B. पाबू जी
C. गोगा जी D. रामदेव जी **(A)**

8. गोगाजी का मेला किस माह में भरता है ?
A. श्रावण B. फाल्गुन
C. माघ D. भाद्रपद **(D)**

9. निम्नलिखित में से कौन सा सुमेलित नहीं है ?

लोकदेवता	**मुख्य स्थल**
A. गोगाजी	गोगामेड़ी
B. मल्लिनाथ	पिचियाक
C. पाबूजी	कोलू
D. तेजाजी	परबतसर

(B)

10. गायों की रक्षा में अपने प्राणोत्सर्ग करने वालों में कौन शामिल नही है ?
A. पाबूजी B. गोगाजी
C. तेजाजी D. वीर फत्ता जी **(D)**

अध्याय – 6

राजस्थान में सामाजिक जीवन

मेले एवं त्यौहार

राजस्थान के प्रमुख मेले -

अजमेर के मेले

- **पुष्कर मेला** - यह मेला पुष्कर (अजमेर) में कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक भरता है। यह राजस्थान का सबसे बड़ा सांस्कृतिक मेला/ सबसे बड़ा रंगीन/रंग बिरंगा / सर्वाधिक विदेशी पर्यटकों का आगमन वाला मेला है। ख्वाजा साहब का उर्स - यह उर्स अजमेर में रज्जब माह की 1 से 6 तारीख तक भरता है। अढ़ाई दिन के झोपड़े में ।
- **कल्पवृक्ष मेला** - यह मेला मांगलियावास (अजमेर) में श्रावण मास की हरयाली अमावस्या को भरता है।
- **कार्तिक पशु मेला** - यह पशु मेला पुष्कर (अजमेर) में कार्तिक शुक्ल 8 से मार्गशीर्ष 2 तक भरता है।

अलवर के मेले

- **चंद्र प्रभु मेला** - यह मेला तिजारा, अलवर में फाल्गुन शुक्ला सप्तमी व श्रावण शुक्ला दशमी को भरता है।
- **नारायणी माता का मेला** - यह मेला बरवा डूंगरी सरिस्का (अलवर) में वैशाख शुक्ल एकादशी को भरता है।
हनुमानजी का मेला - यह मेला पांडुपोल (अलवर) में भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी एवं पंचमी को भरता है।
- **भृर्तहरि मेला** - यह मेला भृर्तहरि (महान योगी भृर्तहरि की तपो भूमि) पर अलवर में भाद्रपद शुक्ला अष्टमी को भरता है। यह कनफटे नाथों की तीर्थस्थली है ।
- **बिलारी माता मेला** - बिलारी माता का यह मेला बिलारी (अलवर) में चैत्र शुक्ला अष्टमी को भरता है।

बाड़मेर के मेले

- **रणछोड़राय का मेला** - यह मेला बाड़मेर जिले के खेड़ क्षेत्र में प्रतिवर्ष राधाष्टमी, माघ पूर्णिमा, बैशाख एवं श्रावण मास की पूर्णिमा व कार्तिक पूर्णिमा भादवा सुदी चतुर्दशी को भरता है।
- **हल्देश्वर महादेव शिवरात्रि मेला** - यह मेला बाड़मेर जिले के पीपलूद (छप्पन की पहाड़ियों के बीच यह मारवाड़ का लघु माउन्ट आबू है।) में शिवरात्रि के अवसर पर भरता है।
- **रानी भटियाणी का मेला** - यह मेला बाड़मेर जिले के जसोल क्षेत्र में कार्तिक वदी पंचमी को भरता है।
- **बजरंग पशु मेला** - यह मेला बाड़मेर जिले के सिणधरी क्षेत्र में मंगसर वदी तृतीया को भरता है।

बालोतरा के मेले

- **मल्लीनाथ पशु मेला** - यह मेला बालोतरा जिले के तिलवाड़ा क्षेत्र में चैत्र कृष्णा एकादशी से चैत्र शुक्ला एकादशी तक भरता है।
- **नाकोड़ाजी का मेला** - यह मेला बालोतरा जिले के नाकोड़ा तीर्थ मेवानगर में पोष कृष्ण दशमी को भरता है।

बीकानेर जिले के मेले

- **निर्जला ग्यारस मेला** - यह मेला बीकानेर जिले के लक्ष्मीनाथ मंदिर में ज्येष्ठ सुदी एकादशी को भरता है।
- **जम्भेश्वर मेला** - यह मेला बीकानेर जिले के मुकाम-तालवा (नोखा) में वर्ष में दो बार - फाल्गुन व आश्विन अमावस्या को भरता है।
- **नागणेची माता का मेला** - यह मेला बीकानेर जिले में नवरात्रा के अवसर पर भरता है।
- **चनणी चेरी मेला (सेवकों का मेला)** - यह मेला बीकानेर जिले के देशनोक में फाल्गुन शुक्ल सप्तमी को भरता है।
- **कपिल मुनि का मेला** - यह मेला बीकानेर जिले के श्री कोलायत जी में कार्तिक पूर्णिमा को भरता है।
- **करणी माता का मेला** - यह मेला देशनोक (बीकानेर) में नवरात्रा (कार्तिक एवं चैत्र माह में) में भरता है।

बांसवाड़ा जिले के प्रमुख मेले

- **घोटिया अम्बा मेला** - यह मेला बांसवाड़ा जिले के घोटिया (बारीगामा) नामक स्थान पर चैत्र अमावस्या को (जिले का सबसे बड़ा ग्रामीण मेला) भरता है।
- **कल्लाजी का मेला** - यह मेला बांसवाड़ा जिले के गोपीनाथ का गढ़ा नामक स्थान पर आश्विन सुदी नवरात्रि प्रथम रविवार को भरता है।
- **अंदेश्वर मेला** - यह मेला बांसवाड़ा जिले के अंदेश्वर में कार्तिक पूर्णिमा को भरता है।
- **गोपेश्वर मेला** - यह मेला बांसवाड़ा जिले के घाटोल के निकट कार्तिक पूर्णिमा को भरता है।
- **मानगढ़ धाम मेला (आदिवासियों का मेला)** - यह मेला बांसवाड़ा के आनंदपुरी के निकट मानगढ़ धाम में मार्गशीर्ष पूर्णिमा को भरता है।

चूरू जिले के मेले

- **भभूता सिद्ध का मेला** - यह मेला चूरू जिले के चंगोई (तारानगर) में भादवा सुदी सप्तमी को भरता है।
- **गोगा जी का मेला** - यह मेला चूरू जिले के ददरेवा गांव में भाद्रपद कृष्णा नवमी (गोगानवमी) को भरता है।
- **सालासर बालाजी का मेला** - यह मेला चूरू जिले के सालासर (सुजानगढ़) में चैत्र व कार्तिक पूर्णिमा को भरता है।

बारां जिले के मेले

- **सीताबाड़ी का मेला (धार्मिक व पशु मेला)** - यह मेला बारां जिले के सीताबाड़ी, केलवाड़ा (सहरिया जनजाति का कुम्भ) नामक स्थान पर ज्येष्ठ अमावस्या (इस मेले में सहरियाओं का स्वयंवर होता है) को भरता है।
- **डोल मेला** - यह मेला बारां जिले के डोल तालाब पर जलझूलनी एकादशी (भाद्रपद शुक्ला एकादशी) को भरता है। इसमें देवविमानों सहित शोभायात्रा निकलती है।
- **ब्रह्माणी माता का मेला** - यह मेला बारां जिले के सोरसन में भरता है। यहां पर गधों का मेला भी लगता है।
- **फूलडोल शोभा यात्रा महोत्सव (श्रीजी का मेला)** - यह मेला बारां जिले के किशनगंज में होली (फाल्गुन मास की पूर्णिमा) के दिन भरता है।
- **कपिल धारा का मेला** - यह मेला सहरिया क्षेत्र (बारां) में कार्तिक पूर्णिमा को भरता है।

डीग के मेले

- **गंगा दशहरा मेला** - यह मेला डीग जिले के कामां क्षेत्र में ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमी से द्वादशी तक भरता है।
- **बृज महोत्सव** – यह मेला द्वादशी से माघ शुक्ल – डीग जिले में भरता है ।

भरतपुर के मेले

- **बसंती पशु मेला** – यह मेला माघ अमावस्या से शुक्ल पंचमी तक भरता है ।
- **गरुड़ मेला** - यह मेला भरतपुर जिले के बंशी पहाड़पुर में कार्तिक शुक्ल तृतीया को भरता है।
- **भोजन बारी/भोजन थाली परिक्रमा** – भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा को कामा में भरता है ।
- **जसवंत पशु मेला** - यह मेला भरतपुर जिले में अश्विन शुक्ल पंचमी से पूर्णिमा तक भरता है।

कोटपूतली-बहरोड़ के मेले

- **बाणगंगा मेला** - यह विराटनगर, कोटपूतली-बहरोड़ में वैशाख पूर्णिमा को भरता है।

जयपुर के मेले

- **गणगौर मेला** - गणगौर मेला जयपुर में चैत्र शुक्ला तीज व चौथ को भरता है।
- **शीतलामाता का मेला** - यह मेला चाकसू, जयपुर में चैत्र कृष्ण अष्टमी को भरता है।
- **गधों का मेला** - आश्विन कृष्ण सप्तमी से आश्विन कृष्ण एकदशी तक लुनियावास (सांगानेर) गांव में भरता है।
- **तीज की सवारी एवं मेला** - यह जयपुर में श्रावण शुक्ला तृतीया को आयोजित होता है।

शाहपुरा के मेले

- **फूलडोल का मेला (रामस्नेही सम्प्रदाय)** - यह मेला **शाहपुरा** जिले के रामनिवास धाम (रामद्वारा) में चैत्र कृष्णा प्रतिपदा से पंचमी तक भरता है।

भीलवाड़ा के मेले

- **सवाई भोज का मेला** - यह मेला भीलवाड़ा जिले के आसींद में सवाई भोज स्थान पर भाद्रपद शुक्ल अष्टमी को भरता है।
- **तिलस्वां महादेव मेला** - यह मेला भीलवाड़ा जिले के तिलस्वां (मांडलगढ़) में शिवरात्रि फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी के अवसर पर भरता है।
- **सौंरत (त्रिवेणी) का मेला** - यह मेला भीलवाड़ा जिले के त्रिवेणी संगम सौंरत (मेनाल, मांडलगढ़) में शिवरात्रि के पर्व पर आयोजित होता है।

वेशभूषा एवं आभूषण

❖ राजस्थान में पुरुष वस्त्र (वेशभूषा)

➢ **पगड़ी**
- इसको पाग, पेचा, फालियो, साफा, घुमालो, फेटो, सेलो, अमलो, लपेटो, बागा, शिरोत्राण, फेंटा आदि नामो से भी जाना जाता है।
- यह सिर पर लपेटे जाना वाला लगभग 8.8 मीटर लम्बी एवं 40 सेमी. चौड़ी होती है।
- उदयपुर की पगड़ी तथा जोधपुर का साफा प्रसिद्ध है।
- युद्ध भूमि में केसरिया पगड़ी, दशहरे पर काले रंग की मंदील पगड़ी, होली पर फूल-पत्तियों वाली पगड़ी, विवाह पर पंचरंगी पगड़ी, श्रावण में लहरिया पगड़ी पहनी जाती है।
- रक्षाबंधन के अवसर पर बहिन भाई को मोठड़ा साफा देती है।
- मीणा एवं गुर्जर जाति की पगड़ी को फेटा कहते है।

➢ **धोती**
- पुरुष द्वारा कमर से घुटने तक पहना जाने वाला वस्त्र है।
- आदिवासियों/भीलों द्वारा पहनी जाने वाली धोती ढेपाड़ा/डेपाड़ा कहलाती है।
- सहरिया जनजाति के लोग धोती को पंछा कहते है।

➢ **अंगरखी / बुगतरी**
- पूरी बाहों का बिना कॉलर एवं बटन वाला कुर्ता जिसे बांधने के लिए कसें (डसें) होती है।
- यह प्रायः सफेद रंग का होता हैं जिस पर कढ़ाई की होती हैं।

➢ **पोतिया**
- भील पुरुषों द्वारा पगड़ी के स्थान पर बांधा जाने वाला वस्त्र पोतिया कहलाता है।

➢ **शेरवानी**
- शादियों में पुरुषों द्वारा पहने जाने वाला वस्त्र जो घुटने से लम्बा एवं कोटनुमा होता है।

➢ **पायजामा**
- अंगरखी, चुगा और जामें के नीचे कमर व पैरों में पहना जाने वाला वस्त्र पायजामा कहलाता है।

➢ **चुगा**
- इसे चोगा भी कहते है। यह अंगरखी के ऊपर पहना जाने वाला वस्त्र होता है।

➢ **आतमसुख**
- तेज सर्दी से बचने के लिए शरीर पर ऊपर से नीचे तक पहने जाने वाला वस्त्र।

➢ **बिरजस (ब्रिजेस)**
- यह पायजामे के स्थान पर पहना जाने वाला चूड़ीदार वस्त्र होता है।

➢ **कमरबंध**
- इसे पटका भी कहते है।
- यह जामा के ऊपर कमर पर बाँधा जाने वाला वस्त्र होता है, जिसे तलवार या कटार को फंसाया जाता है ।

➢ **पछेवड़ा**
- तेज सर्दी में ठण्ड से बचाव के लिए पुरुषों द्वारा कम्बल की तरह ओढ़े जाने वाला मोटा सूती वस्त्र पछेवड़ा कहलाता है।

➢ **अंगोछा**
- धूप से बचने के लिए पुरुषों द्वारा सिर पर बाँधा जाने वाला वस्त्र अंगोछा कहलाता है।

❖ राजस्थान में पुरुषों के आभूषण

➢ **सिर**
- कलंगी, सिरपेच, सेहरा, मुकुट।

➢ **कान**
- मुरकी, ओगनिया, झेला, लूंग।

➢ **गला**
- कंठा, चैंकी, फूल।

➢ **हाथ**
- कड़ा, मूरत, ठाला, ताती, माठी

❖ राजस्थान में महिलाओं (स्त्रियों) के वस्त्र/वेशभूषा

➢ **कुर्ती और कांचली**
- स्त्रियों द्वारा शरीर के ऊपरी हिस्से (कमर के ऊपर) पहनी जाती है।
- कांचली के ऊपर कुर्ती पहनी जाती है, जिसमें कांचली के बांहें होती है जबकि कुर्ती के बांहें नहीं होती है।

➢ **घाघरा**
- इसे लहंगा, पेटीकोट, घाबला आदि नामो से भी जाना जाता है।
- यह कमर से नीचे एड़ी तक पहना जाने वाला घेरदार वस्त्र होता है, जो कलियों को जोड़कर बनाया जाता है।
- आदिवासियों के घाघरे को कछाबू कहते है।
- आदिवासियों के नीले रंग के घाघरे को नांदना कहते है।

➢ **ओढ़नी (लुंगड़ी)**
- महिलाओं द्वारा यह सिर पर ओढ़ी जाती है।
- लहरिया, पोमचा, धनक, चुंदरी, मोठड़ा आदि लोकप्रिय ओढ़नियां है।
- डूंगरशाही ओढ़नी जोधपुर की प्रसिद्ध है।
- ताराभांत की ओढ़नी आदिवासी महिलाओं द्वारा ओढ़ी जाती है।

➢ **लहरिया**
- यह श्रावण मास की तीज को पहने जाने वाली अनेक रंगों की ओढ़नी है।
- समुंद्री लहर नामक लहरिया जयपुर में रंगा जाता है।

➢ **मोठड़ा**
- जब लहरिया की धारियां एक-दूसरे को काटती हुई बनाई जाती है, तो वह मोठड़ा कहलाती है।
- मोठड़ा जोधपुर की प्रसिद्ध है।

➢ **सलवार**
- कमर से लेकर पांवों में पहना जाने वाला वस्त्र सलवार कहलाता है ।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

UP Police Constable 2024 - http://surl.li/rbfyn (98 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856WI8&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD – 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
MPPSC Prelims 2023	17 दिसम्बर	63 प्रश्न (100 में से)
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये

whatsapp - https://wa.link/klbi9k 1 web.- https://bit.ly/eo-ro-notes

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

Our Selected Students

Approx. 483+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
	Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
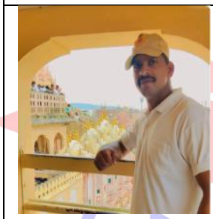	**Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel**	Rac batalian	729141135	Dis.-Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota
	Sanjay	Haryana PCS	96379 Admit Card HARYANA PUBLIC SERVICE COMMISSION	Jind (Haryana)

And many others……

FREE SAMPLE

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

WhatsApp करें - https://wa.link/klbi9k

Online Order करें - https://bit.ly/eo-ro-notes

Call करें - 9887809083